गतिविधियों के माध्यम से मानचित्र पढ़ना

शोभा रानी एच.

हम यह दावा करते हैं कि सीखना एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। इसी के साथ-साथ यह दृढ़ विश्वास भी है कि सीखने को निरन्तर जारी रखने के लिए किसी-न-किसी प्रकार का सकारात्मक सुदृढ़ीकरण बहुत ज़रूरी है। सही अर्थों में सीखना सुदृढ़ीकरण के माध्यम से ही सम्भव हो पाता है। सीख गए, ऐसा तब माना जाता है जब हम अपने रोज़मर्रा के जीवन में अर्जित किए हुए ज्ञान को लागू करने लगते हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ़) 2005 में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) पर विशेष ध्यान दिया गया है। इसमें इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि सीखना एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है और जिसमें कक्षा के बाहर होने वाले अनुभव मिलकर ज्ञान का निर्माण करते हैं। इसके अलावा, शिक्षक कोई मशीन नहीं हैं जो विद्यार्थियों के दिमाग़ में ज्ञान ठूँसते जाएँ। बच्चों में ख़ुद ही ज्ञान अर्जित करने की क्षमता होती है। हर एक बच्चा ख़ुद ही सीखने में सक्षम होता है, शिक्षक को बस एक सहायक की तरह से काम करते हुए बच्चे को स्वतंत्र रूप से सीखने की दिशा में सहयोग करने के लिए उचित सहारा देना होता है।

मानचित्र पढ़ना सीखने का एक ऐसा ही क्षेत्र है। मानचित्र पढ़ने के कौशल को बढ़ावा देने के लिए कई प्रयास किए गए हैं। आज के डिजिटल युग में, मानचित्र पढ़ने की कला पुराने ज़माने के किसी कौशल की तरह लग सकती है। लेकिन फिर भी इसके महत्त्व को कम नहीं आँका जा सकता। स्कूलों में मानचित्र पढ़ना सिखाने का शिक्षा में ख़ास स्थान होता है। जीपीएस और नेविगेशन एप्स के इस ज़माने में, मानचित्र पढ़ने का बुनियादी कौशल काफ़ी ज़रूरी है। विद्यार्थियों को मानचित्र के मुताबिक़ चलना व उनकी मदद से दिशा, मार्ग, स्थान वग़ैरह पहचानना सिखाना उन्हें खोजबीन के लिए एक ऐसा उपकरण देने जैसा है जिसका महत्त्व किसी भी समय में कम नहीं होता है। इस लेख में, हम मानचित्र पढ़ना सिखाने के उद्देश्यों की जाँच-परख करेंगे और यह भी पता लगाएँगे कि प्राथमिक स्तर पर इस कौशल को सीखने से हमारे आस-पास की दुनिया की समझ कैसे बेहतर होती है और इससे किस तरह स्थानिक जागरूकता, समालोचनात्मक सोच, संज्ञानात्मक विकास और भौगोलिक ज्ञान को भी बढ़ावा मिलता है।

मानचित्र पढ़ने से सम्बन्धित गतिविधियाँ

हमारे विद्यालय में ख़ासतौर पर तीन गाँवों के बच्चे आते हैं। शुरुआत में, हमने इन बच्चों को तीन समूहों में बाँटा और उन्हें दिशाओं और प्रतीकों का उपयोग करके अपने-अपने घरों से स्कूल आने का रास्ता दर्शाने को कहा।

इसी के अनुसार, बच्चों ने उत्साहपूर्वक प्रतीकों और दिशाओं का उपयोग करके अपने गाँव का नक़्शा बनाया। बाद में, उन्होंने मानचित्र पर अपने दोस्तों के घर, मन्दिर, झील, चर्च, मस्ज़िद, दरगाह, कुएँ, खेत, सड़क आदि स्थान कहाँ होंगे इस बारे में आपस में चर्चा की। इसे आगे बढ़ाने के लिए, तीनों समूहों ने अपने गाँव का मॉडल बनाने का फ़ैसला किया। हमने इस प्रोजेक्ट में गणित और कला शिक्षकों की मदद ली। बच्चों द्वारा डिज़ाइन किए गए मानचित्रों और टोपोशीट्स (क्षेत्र की स्थलाकृति दिखाने वाला मानचित्र) के साथ-साथ कार्डबोर्ड और ड्राइंग शीट का उपयोग करके गाँव का एक छोटा मॉडल बनाया गया। उसमें यह भी सुनिश्चित किया गया कि मॉडल में पैमाना, रंग और प्रतीक सटीक दिखाई दें। इस गतिविधि से उत्साहित होकर बच्चों ने कॉन्क्रीट और ईंटों का इस्तेमाल करके अपने गाँव का मॉडल बनाने की इच्छा ज़ाहिर की।

इस प्रोजेक्ट से बच्चों को मानचित्रण की बुनियादी बातें सीखने में मदद मिली। इसके बाद कुछ बच्चे अपनी ग्राम पंचायत द्वारा बनाए गए मानचित्रों में अपने घरों, खेतों और यहाँ तक कि भूमि सीमा (सर्वे) और चेक बाँध को भी पहचान पाए। यह गतिविधि उनके रोज़मर्रा के जीवन से जुड़ी हुई थी, इसलिए उनको यह दिलचस्प लगी।

एक अन्य प्रोजेक्ट में, मानचित्र बनाने में माप के महत्त्व को समझने के लिए बच्चों ने पहले विभिन्न राज्यों के लघु आकार के मानचित्रों को माप की सहायता से बड़ा बनाया और उनको स्कूल के नोटिस बोर्ड पर लगाया। इससे उन्हें अपने पड़ोसी राज्यों, उनकी राजधानियों और तटीय क्षेत्रों के बारे में जानने में मदद मिली। उन्होंने मानचित्र बनाने में पैमाने (स्केल) के महत्त्व को भी समझा। ये गतिविधियाँ उन्होंने उच्च प्राथमिक (छटवीं, सातवीं) कक्षाओं में की थीं। इससे उन्होंने जो सीखा उससे वे जब कक्षा-9 और 10 में पहुँचे तब मानचित्र बनाने और स्थानों की पहचान करने में सक्षम थे।

मानचित्र पढ़ने को सुदृढ़ करने के तरीक़े

मानचित्र पढ़ने में कुशलता आने के दीर्घकालिक लाभ होते हैं। जब बच्चे निम्नलिखित गतिविधियाँ करते हैं तो यह इस ज्ञान के व्यवहारिक उपयोग और अधिक प्रभावी ढंग से सीखने को सुनिश्चित करता है।

परिभ्रमण : परिभ्रमण में मानचित्र पढ़ने की गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं, जैसे मानचित्रों का उपयोग करके ऐतिहासिक स्थानों की पहचान करना या उनकी खोज करना। ये व्यवहारिक अनुभव कक्षा में सीखने को प्रोत्साहित करते हैं।

तकनीक के साथ हाथ मिलाना : पारम्परिक मानचित्र पढ़ने को आधुनिक तकनीक, जैसे कि भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) के उपयोग के साथ जोड़कर इसे वर्तमान विद्यार्थियों के लिए अधिक दिलचस्प और प्रासंगिक बनाया जा सकता है।

विभिन्न संस्कृतियों को सराहना : विभिन्न सभ्यताओं के बारे में पढ़ते समय विभिन्न देशों के मानचित्रों की तलाश और पड़ताल करने से विविध संस्कृतियों के प्रति सकारात्मक समझ विकसित हो सकती है और आपस में जुड़ी दुनिया के बारे में उनकी समझ भी बढ़ सकती है।

समस्या हल करने का कौशल : मानचित्र पढ़ना विद्यार्थियों को स्थानिक समस्याओं का विश्लेषण और समाधान करना सिखाता है। यह उन्हें मार्ग-दिशा तय करते हुए आगे बढ़ने और भौगोलिक जानकारी समझने के दौरान विश्लेषणात्मक तरीक़े से सोचने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह कौशल पर्यावरण विज्ञान और कई क्षेत्रों में बहुत महत्त्वपूर्ण है जैसे शहरी नियोजन, सम्भार तंत्र (Logistics) में। ये कारक न सिर्फ भूगोल में बल्कि अन्य विषयों में भी काम आते हैं।

ऐतिहासिक समझ : मानचित्र ऐतिहासिक अन्तर्दृष्टि प्रदान करते हैं और विद्यार्थियों को यह समझने में मदद करते हैं कि समय के साथ भौगोलिक सीमाएँ, भूदृश्य और स्थानों के नाम किस तरह बदल गए हैं। यह ऐतिहासिक सन्दर्भ इतिहास और भूगोल की उनकी समझ को समृद्ध करता है।

पर्यावरण प्रबन्धन : मानचित्र पढ़ने से पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता बढ़ती है। यह विद्यार्थियों को पारिस्थितिक तंत्र, प्राकृतिक संसाधनों और भूमि उपयोग को समझने, ज़िम्मेदार पर्यावरणीय प्रबन्धन और टिकाऊपन को बढ़ावा देने के योग्य बनाता है।

चलते-चलते

मानचित्र को पढ़ना सिखाना स्थानिकी के बारे में जागरूक बनाने, समालोचनात्मक सोच विकसित करने और हमारे आस-पास की दुनिया से गहरे सम्बन्ध बनाने की ओर ले जाता है। एक विद्यार्थी की शैक्षिक यात्रा में इस कौशल को निखारने से यह सुनिश्चित होता है कि वे न केवल सीखते हैं बल्कि इस कौशल को अपने जीवन में लागू भी करते हैं और इसकी सराहना भी करते हैं। आइए हम अपने युवा विद्यार्थियों का इस कार्टोग्राफ़िक (मानचित्र निर्माण) साहसिक कार्य में मार्गदर्शन करें, ताकि उन्हें आत्मविश्वास और जिज्ञासा के साथ दुनिया के रास्तों को खोजने और उनसे गुज़रने में मदद मिले।

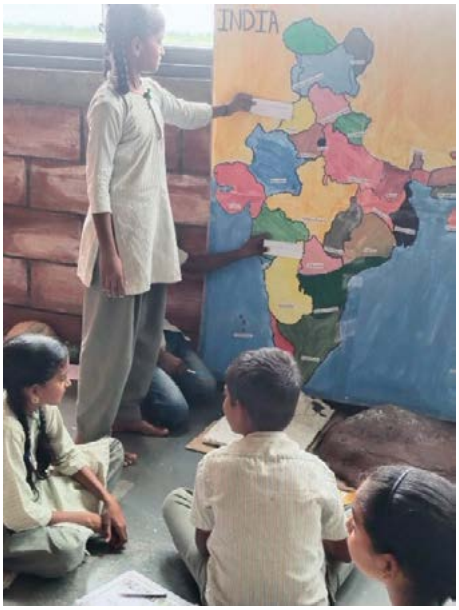

***चित्र-1 और 2** : कक्षा के अन्दर गतिविधियाँ।*

***चित्र-3 और 4** : कक्षा के बाहर गतिविधियाँ।*

शोभा रानी एच. अज़ीम प्रेमजी स्कूल, यादगीर में सामाजिक विज्ञान की शिक्षिका हैं। उन्होंने इतिहास में स्नातकोत्तर उपाधि हासिल की है और बीएड किया है। उन्हें छटवीं से आठवीं कक्षा के अपने विद्यार्थियों के साथ शिक्षण में नए प्रयोगों और विकास के बारे में सीखना और प्रयोग करना पसन्द है। उन्हें किताबें पढ़ना और टीवी देखना अच्छा लगता है। उनसे *shobharani.h@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : निशांत राणा **पुनरीक्षण :** प्रतिका गुप्ता **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय